International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 259-261

# वैश्विक बाज़ार में हिंदी की उपयोगिता

**प्रिंस गुप्ता**
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

**सारांश**
प्रस्तुत शोध–पत्र वैश्विक बाज़ार में हिंदी की उपयोगिता का बहुआयामी अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें भाषा, बाज़ार, अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक संवाद के बीच के संबंधों को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। हिंदी, वर्तमान में लगभग 55 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा है तथा विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। यही कारण है कि वैश्विक बाज़ार में हिंदी भाषा अपनी उपयोगिता के नए आयाम स्थापित कर रही है। भारत की वैश्विक उपस्थिति, प्रवासी समुदायों की निरंतर बढ़ती संख्या, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मों पर हिंदी सामग्री की वृद्धि और अर्थव्यवस्था में हिंदी के उदय ने इसे विपणन, तकनीक, कला, शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय नीति का महत्वपूर्ण घटक बना दिया है। आर्थिक दृष्टि से ग्राहक सेवा, विपणन और रोजगार के क्षेत्रों में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह कला, साहित्य, फिल्मों और सामाजिक पहचान का सशक्त माध्यम है। वहीं तकनीकी परिदृश्य में हिंदी का डिजिटल विस्तार और एआई–उन्मुख भाषा नवाचार इसे वैश्विक संवाद का हिस्सा बनाते हैं। हिंदी निरंतर वैश्विक उपयोगिता का विस्तार कर रही है और भविष्य में यह और अधिक महत्वपूर्ण होती जाएगी।

**मूल शब्दः** हिंदी उपयोगिता, वैश्विक बाज़ार, सांस्कृतिक संवाद, तकनीकी भाषा, विपणन, डिजिटल हिंदी, अनुवाद उद्योग, मीडिया, प्रवासी समुदाय, सांस्कृतिक कूटनीति

सम्पूर्ण विश्व में लगभग सात हज़ार भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से केवल कुछ ही जैसे अंग्रेज़ी, मंदारिन, हिंदी, स्पैनिश, फ्रेंच और अरबी भाषाएँ तकनीकी, आर्थिक और वैश्विक ग्राह्यता के सन्दर्भ में प्रमुख हैं। हिंदी केवल भारत की राजभाषा नहीं, बल्कि भारतीय समाज की संवेदना, लोकचेतना और सांस्कृतिक चेतना की वाहक भाषा है। हिंदी की यह क्षमता उसे वैश्विक बाजार में एक सशक्त पहचान देती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'भारत दुर्दशा' में भाषा के महत्व को बहुत पहले स्पष्ट कर दिया था– "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।"[1] विश्व स्तर पर हिंदी बोलने वालों की संख्या मातृभाषा एवं द्वितीय भाषा के रूप में लगभग 80 करोड़ से अधिक मानी जाती है। यह संख्या वैश्विक बाज़ार में हिंदी की उपयोगिता और पहुँच दोनों को स्पष्ट करती है।

वैश्विक बाज़ार वह व्यवस्था है जिसमें व्यापार, उत्पादन, पूंजी, श्रम और सूचना का आदान–प्रदान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है। वैश्वीकरण/ग्लोबलाइजेशन ने दुनिया को एक आर्थिक नेटवर्क में परिवर्तित कर दिया है। आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई–कॉमर्स और सोशल मीडिया बाजार को दिशा दे रहे हैं। इस संदर्भ में भाषा केवल संप्रेषण नहीं, बल्कि ग्राहक विश्वास का माध्यम भी बन चुकी है। वैश्विक बाज़ार में स्थानीय भाषा का उपयोग उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए किया जाता है। उपभोक्ता उसी भाषा में उत्पाद को अधिक स्वीकार करता है, जिसमें वह सहज अनुभव करता है। इसलिए हिंदी का महत्व लगातार बढ़ रहा है।

हिंदी के वैश्विक विस्तार का एक बड़ा कारण भारतीय प्रवासी समुदाय है। संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका तथा खाड़ी देशों में हिंदी–भाषियों की बड़ी संख्या निवास करती है। प्रवासी समुदाय ने हिंदी को केवल घरेलू भाषा के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान के रूप में संरक्षित रखा है। वैश्विक स्तर पर हिंदी दिवस, कवि सम्मेलन, हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ, रेडियो कार्यक्रम और हिंदी फिल्में प्रवासी समाज में हिंदी को जीवंत बनाए हुए हैं। यह सांस्कृतिक उपस्थिति बाजार में हिंदी की उपयोगिता को और भी बढ़ाने में सहायक है।

| | क्षेत्र | हिंदी की भूमिका | उदाहरण |
|---|---|---|---|
| 1. | शिक्षा | भाषा–आधारित पाठ्यक्रम | हिंदी में MOOCs (मैसिव ओपन |
| 2. | विज्ञापन | स्थानीय भावनात्मक जुड़ाव | FMCG (तेजी से बिकने वाली |
| 3. | ई–कॉमर्स | उपभोक्ता संवाद और बिक्री | अमेजॉन/फ्लिपकार्ट का हिंदी इंटरफेस |
| 4. | डिजिटल मीडिया | सामग्री निर्माण और प्रचार | YouTube के कई हिंदी चौनल |
| 5. | बैंकिंग | ग्राहक सुविधा | हिंदी में नेटबैंकिंग/UPI |
| 6. | अनुवाद उद्योग | व्यापारिक व तकनीकी अनुवाद | Subtitles/Manual Translation |
| 7. | मनोरंजन | वैश्विक दर्शक निर्माण में | नेटफ्लिक्स में हिंदी सीरीज़ |

## वैश्विक बाजार में हिंदी की आर्थिक उपयोगिता

आज भारत एक विशाल उपभोक्ता बाजार है। करोड़ों लोग हिंदी को अपनी प्राथमिक भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। इसलिए कंपनियाँ हिंदी में विज्ञापन बनाकर अधिक ग्राहकों तक पहुँचती हैं। बैंकिंग, बीमा, ई–कॉमर्स, टेलीकॉम, ऑटोमोबाइल और FMCG कंपनियाँ हिंदी में प्रचार को प्राथमिकता देती हैं। मुंशी प्रेमचंद ने साहित्य और समाज के संबंध को स्पष्ट करते हुए कहा था – "साहित्य समाज का दर्पण है।"[2] यदि साहित्य समाज का दर्पण है, तो भाषा बाजार का दर्पण है, क्योंकि बाजार समाज की ही आर्थिक अभिव्यक्ति है। हिंदी विज्ञापन न केवल उत्पाद बेचते हैं, बल्कि संस्कृति और भावनाओं को भी आपस में जोड़ते हैं।

वर्तमान में कॉल सेंटर, ग्राहक सहायता, डिजिटल मार्केटिंग और कंटेंट राइटिंग जैसे क्षेत्रों में हिंदी जानने वालों की मांग अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत के उपभोक्ताओं से संवाद के लिए हिंदी ग्राहक सेवा शुरू कर रही हैं। इसके अलावा खाड़ी देशों में काम कर रहे भारतीय श्रमिकों के बीच हिंदी एक

सामान्य संचार की भाषा बन चुकी है। यह स्थिति दर्शाती है कि हिंदी केवल सांस्कृतिक भाषा नहीं, बल्कि रोजगार की भाषा भी बन रही है। भारत विश्व के सबसे बड़े उपभोक्ता बाजारों में से एक है। करोड़ों लोग हिंदी या हिंदी–समझने वाली भाषाओं में संवाद करते हैं। ऐसे में जो भी बहुराष्ट्रीय कंपनी भारत में सफल होना चाहती है, उसे हिंदी का सहारा लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए कोका–कोला का "ठंडा मतलब कोका–कोला" अभियान ग्रामीण और अर्धशहरी भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। हिंदुस्तान यूनिलीवर अपने उत्पादों के विज्ञापन हिंदी में प्रसारित करता है, जिससे ग्रामीण उपभोक्ताओं तक सीधी पहुँच बनती है।

हिंदी सिनेमा ने वैश्विक बाजार में भारत की सांस्कृतिक पहचान स्थापित की है। बॉलीवुड की फिल्मों ने एशिया, यूरोप और मध्य–पूर्व में करोड़ों दर्शक बनाए हैं। फिल्म दंगल ने चीन में ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की। थ्री–इडियट्स फिल्म ने एशियाई देशों में भारतीय शिक्षा–व्यवस्था पर विमर्श को जन्म दिया। पठान जैसी फिल्मों ने वैश्विक बॉक्स–ऑफिस पर हिंदी की आर्थिक शक्ति को प्रमाणित किया। इसके अतिरिक्त, हिंदी वेब–सीरीज़ ने भी अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों को आकर्षित किया है। नेटफ्लिक्स और अमेजॉन प्राइम विडिओ पर हिंदी सामग्री विश्वभर में देखी जा रही है। यह सांस्कृतिक निर्यात न केवल आर्थिक लाभ देता है, बल्कि हिंदी को 'सॉफ्ट पावर' के रूप में भी स्थापित करता है।

भारत पर्यटन की दृष्टि से आकर्षक देशों में से एक है। विदेशी पर्यटक भारतीय संस्कृति को समझने के लिए हिंदी सीखने में रुचि दिखाते हैं। विश्व के कई देशों जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, फ़िजी आदि में हिंदी बोलने वाले समुदाय अधिक सक्रिय हैं। प्रवासी भारतीय हिंदी के माध्यम से भारतीय उत्पादों, फिल्मों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रचार करते हैं। इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संबंध मजबूत होते हैं।

भारत में स्टार्ट–अप संस्कृति तेजी से विकसित हो रही है। कई स्टार्ट–अप अपने ऐप और सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध करा रहे हैं। पेटीएम ने हिंदी इंटरफेस देकर डिजिटल भुगतान को गाँव–गाँव तक पहुँचाया। बायजूस और अन्य एड–टेक प्लेटफॉर्म हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा दे रहे हैं। फूड डिलीवरी ऐप जोमैटो ने हिंदी भाषा विकल्प जोड़कर छोटे शहरों के ग्राहकों तक पहुँच बनाई। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि हिंदी डिजिटल अर्थव्यवस्था में समावेशन का सशक्त माध्यम बनकर सामने आई है।

टेलीविजन, रेडियो और सोशल मीडिया पर हिंदी विज्ञापनों की व्यापकता यह सिद्ध करती है कि उपभोक्ता–मनोविज्ञान में हिंदी का प्रभाव अधिक है। भारतीय क्रिकेट जैसे खेल आयोजनों में हिंदी कमेंट्री और विज्ञापन ब्रांडों के लिए अधिक दर्शक सुनिश्चित करते हैं। इंडियन प्रीमियर लीग के दौरान प्रसारित हिंदी विज्ञापनों की पहुँच करोड़ों दर्शकों तक होती है। वर्तमान में अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई–सिखाई जाती है। अनुवाद, मीडिया, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और कूटनीति में हिंदी का ज्ञान, रोजगार के नित–नए अवसर प्रदान करता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ ऐसे कर्मचारियों को प्राथमिकता देती हैं जो हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में दक्ष हों, क्योंकि वे भारतीय बाजार को बेहतर समझ सकते हैं।

सरकार की 'लोकल फॉर वोकल' जैसी पहल ने स्थानीय उत्पादों के प्रचार में हिंदी की भूमिका को मजबूत किया है। सोशल मीडिया पर हिंदी में उत्पाद समीक्षा और प्रचार–अभियान उपभोक्ताओं को अधिक प्रभावित करते हैं। आज अनेक छोटे यूट्यूबर और इंस्टाग्राम क्रिएटर हिंदी में सामग्री बनाकर वैश्विक स्तर पर आय अर्जित कर रहे हैं। यह हिंदी की आर्थिक उपयोगिता का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

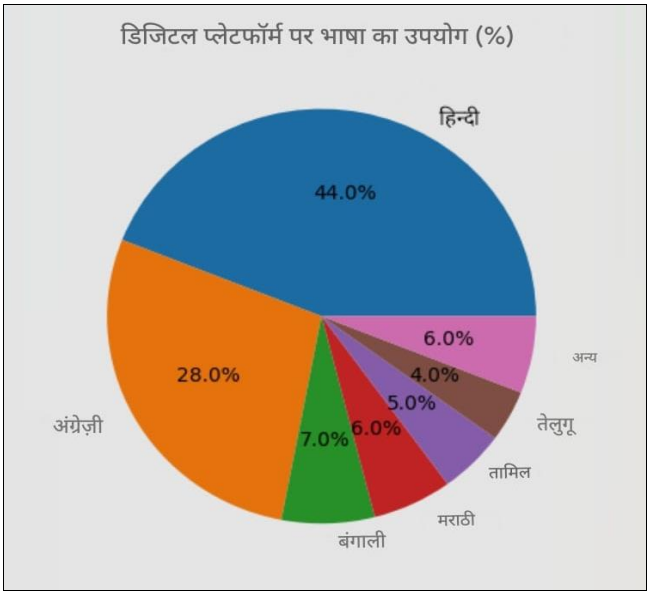


वैश्विक बाजार में अनुवाद उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। हिंदी से अंग्रेज़ी, अरबी, फ्रेंच, चीनी और स्पैनिश अनुवाद की मांग बढ़ रही है। फिल्मों के सबटाइटल, सरकारी दस्तावेज़, तकनीकी पुस्तिकाएँ, डिजिटल कंटेंट, व्यापारिक समझौतेकृइन सभी क्षेत्रों में हिंदी अनुवाद की आवश्यकता बढ़ रही है। इससे भाषा एक आर्थिक संसाधन बन जाती है। हिंदी फिल्में और संगीत वैश्विक बाजार में भारत की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं। बॉलीवुड विश्व का सबसे बड़ा फिल्म उद्योग बनने की राह पर अग्रसर है। हिंदी फिल्मों को अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, मध्य एशिया और मध्य–पूर्व में बड़ी संख्या में देखा जाता है। नेटफलिक्स, अमेजॉन प्राइम और डिज़्नी प्लस जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म हिंदी सामग्री को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचा रहे हैं। इससे हिंदी का सांस्कृतिक बाजार और विस्तृत हुआ है। महादेवी वर्मा ने साहित्य की सामाजिक भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा– "कवि की वाणी समाज की अंतरात्मा की वाणी है।"[3] हिंदी फिल्मों और गीतों के माध्यम से यही "अंतरात्मा" वैश्विक मंच पर पहुँच रही है।

आज अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भाषा और संस्कृति का बड़ा महत्व है। भारत विश्व में अपनी सांस्कृतिक पहचान को योग, आयुर्वेद, संगीत, नृत्य और साहित्य के माध्यम से स्थापित कर रहा है। हिंदी इस सांस्कृतिक कूटनीति का आधार बनती है। विदेशों में हिंदी दिवस, हिंदी सम्मेलन, हिंदी नाटक मंचन, कवि सम्मेलन और साहित्य उत्सव आयोजित होते हैं। इससे हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ती है और साथ ही भारत की "सॉफ्ट पावर" मजबूत होती है।

### डिजिटल क्रांति और हिंदी

डिजिटल प्लेटफॉर्म ने हिंदी को अभूतपूर्व विस्तार दिया है। पहले हिंदी साहित्य और भाषा मुख्यतः पुस्तकों और पत्रिकाओं तक सीमित थी, किंतु आज यूट्यूब, पॉडकास्ट, इंस्टाग्राम, फेसबुक और ब्लॉगिंग ने हिंदी को एक वैश्विक डिजिटल भाषा बना दिया है। हिंदी यूट्यूब चौनलों के करोड़ों दर्शक हैं। हिंदी न्यूज पोर्टल और वेब मैगजीन विश्व स्तर पर पढ़े जा रहे हैं। यह डिजिटल उपस्थिति वैश्विक बाजार में हिंदी की उपयोगिता को मजबूत करती है। AI, मशीन अनुवाद, वॉयस असिस्टेंट और चौटबॉट जैसी तकनीकों में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। गूगल असिस्टेंट, गूगल ट्रांसलेट और कई सरकारी डिजिटल सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं ने हिंदी को तकनीकी विकास के साथ जोड़ दिया है। यद्यपि तकनीकी शब्दावली, मानकीकरण और वैज्ञानिक भाषा निर्माण में अभी भी चुनौतियाँ मौजूद हैं।

डिजिटल क्रांति ने हिंदी को वैश्विक बाजार में नई पहचान दी है। अमेजॉन तथा फ्लिपकार्ट ने हिंदी इंटरफेस उपलब्ध कराकर छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के ग्राहकों को जोड़ा। गूगल ने हिंदी सर्च, वॉयस टाइपिंग और अनुवाद सुविधा देकर डिजिटल पहुँच बढ़ाई। यूट्यूब पर हिंदी कंटेंट–क्रिएटर्स करोड़ों दर्शकों तक पहुँच रहे हैं। मेटा प्लेटफॉर्म ने हिंदी को प्रमुख भाषाओं में शामिल किया, जिससे हिंदीभाषी उपयोगकर्ता सक्रिय रूप से डिजिटल संवाद में शामिल हुए। आज हिंदी में ब्लॉग, पॉडकास्ट, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से छोटे उद्यमी भी वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं।

वैश्विक बाजार केवल पूंजी का खेल नहीं, बल्कि श्रम का भी संसार है। हिंदी साहित्य में श्रमिक वर्ग की पीड़ा और संघर्ष का चित्रण व्यापक रूप से मिलता है। निराला की कविता "वह तोड़ती पत्थर" श्रम की कठोरता को उजागर करती है– "वह तोड़ती पत्थर, देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर।"[4] यह कविता वैश्विक बाजार की उस सच्चाई को दर्शाती है, जिसमें श्रम को उत्पादक शक्ति में बदल दिया जाता है। वैश्विक स्तर पर अंग्रेज़ी का प्रभुत्व बना हुआ है। व्यापार, तकनीक और शिक्षा में अंग्रेज़ी को प्राथमिकता दी जाती है। यह स्थिति हिंदी सहित अनेक भाषाओं के लिए चुनौती बनती है। हिंदी केवल बाजार की भाषा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना की भाषा है। दिनकर ने आत्मसम्मान और शक्ति की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा– "क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।"[5] यह पंक्ति सांस्कृतिक स्वाभिमान और आत्मबल का प्रतीक है। वैश्विक बाजार में हिंदी का विस्तार तभी संभव है, जब हिंदी के प्रति समाज में आत्मविश्वास और सम्मान बना रहे।

हिंदी की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं। भारत की अर्थव्यवस्था बढ़ रही है, डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रम विस्तार कर रहे हैं, और भारतीय प्रवासी समुदाय लगातार मजबूत हो रहा है। इससे हिंदी के लिए वैश्विक अवसर बढ़ रहे हैं। हिंदी में कंटेंट निर्माण आज एक बड़ा उद्योग बन रहा है। यूट्यूब और सोशल मीडिया पर हिंदी क्रिएटर्स की आय वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है। हिंदी सीखने वाले विदेशी छात्रों की संख्या भी बढ़ रही है।

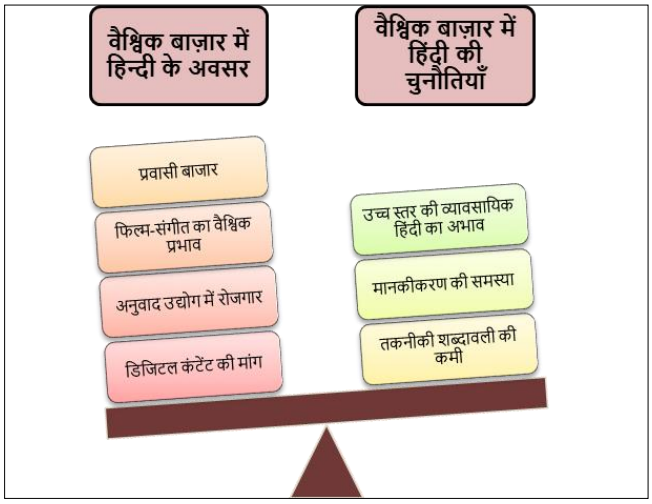


हिंदी की पहचान केवल व्यापार और बाजार तक सीमित नहीं है। हिंदी की संवेदनशीलता, मानवीयता और भावनात्मक गहराई उसे वैश्विक साहित्यिक मंच पर विशिष्ट बनाती है। महादेवी वर्मा की पंक्ति– "मैं नीर भरी दुख की बदली।"[6] हिंदी साहित्य की करुणा और भावनात्मक शक्ति को व्यक्त करती है। यही संवेदना वैश्विक पाठकों को हिंदी की ओर आकर्षित करती है। हिंदी साहित्य और लोकपरंपरा मानवता और नैतिकता का संदेश देती है। गोस्वामी तुलसीदास का यह कथन वैश्विक मूल्यों को जोड़ने में सहायक है– "परहित सरिस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई।"[7] यह पंक्ति बाजार आधारित जीवन में मानवीयता का मार्गदर्शन करती है।

**निष्कर्ष:** यह कहा जा सकता है कि वैश्विक बाजार में हिंदी की उपयोगिता बहुआयामी है। वैश्विक बाजार में हिंदी की उपयोगिता आज केवल संभावना नहीं, बल्कि एक वास्तविकता बन चुकी है। हिंदी अब व्यापार, डिजिटल प्लेटफॉर्म, मीडिया, तकनीक, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्रों में तेजी से विस्तार कर रही है। यह भाषा न केवल भारत के विशाल बाजार को प्रभावित करती है, बल्कि विश्व के अनेक देशों में बसे प्रवासी समुदायों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर भी अपनी पकड़ मजबूत कर रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति उसकी जन–स्वीकृति, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक विविधता है। परंतु यदि हिंदी को वैश्विक बाजार में और अधिक प्रभावशाली बनाना है, तो तकनीकी का मानकीकरण, उच्च शिक्षा में हिंदी का विस्तार, अनुवाद उद्योग का विकास और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। हिंदी व्यापार, विपणन, रोजगार, डिजिटल मीडिया, मनोरंजन उद्योग और सांस्कृतिक कूटनीति के क्षेत्र में निरंतर प्रभावशाली बन रही है। अतः हिंदी केवल भारत की भाषा नहीं, बल्कि एक उभरती हुई वैश्विक आर्थिक–सांस्कृतिक भाषा है।

## संदर्भ सूची


1. भारतेंदु हरिश्चंद्र, भारतेंदु ग्रंथावली, खंडद्1, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ. 117
2. प्रेमचंद, प्रेमचंद रचनावली, खंड–13, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 35
3. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 11
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', अनामिका, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ. 42
5. रामधारी सिंह 'दिनकर', रश्मिरथी, प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, पृ. 64
6. महादेवी वर्मा, नीहार, इलाहाबाद: साहित्य भवन, पृ. 57
7. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, गोरखपुर: गीताप्रेस, उत्तरकांड, पृ. 781
8. डॉ. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज (1999), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
9. नामवर सिंह, साहित्य की पहचान (2008), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
10. धीरेंद्र वर्मा, भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा (2001), इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
11. अशोक वाजपेयी, हिंदी: समय और समाज (2010), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
12. डॉ. गीता दुबे, हिन्दी का वैश्विक स्वर: द्विभाषीय शिक्षा की नई दिशा.
13. Government of India, Census of India: Language Data (2011), Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. https://censusindia.gov.in
14. Ministry of Electronics and Information Technology, Govt. of India (2015 onwards) https://www.meity.gov.in
15. Digital India Programme Reports, नई दिल्ली: भारत सरकार.